REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | MARCH - 2025

रामचरित मानस कांडों का संक्षिप्त विवेचनात्मक अध्ययन एवं महत्व

डॉ. अमित कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, शंभवी स्कूल ऑफ एजुकेशन, धुसेरा, रायपुर (छ.ग)

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की भक्ति परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह ग्रंथ केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध है। अवधी भाषा में रचित यह काव्य भगवान राम के जीवन, उनके आदर्शों, मर्यादा और धर्म की स्थापना का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। रामचरितमानस सात कांडों में विभाजित है बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड। प्रत्येक कांड में रामकथा के विभिन्न प्रसंगों का वर्णन है, जो मानव जीवन के आदर्शों को स्थापित करते हैं। प्रस्तुत शोधात्मक लेख में इन सभी कांडों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

1. बालकांड

बालकांड रामचरितमानस का प्रथम कांड है, जिसमें भगवान राम के जन्म से लेकर उनके विवाह तक की घटनाओं का वर्णन मिलता है। इस कांड की शुरुआत भगवान की स्तुति और गुरु वंदना से होती है। इसके पश्चात तुलसीदास जी रामावतार का कारण बताते हैं, जिसमें रावण के अत्याचारों से पृथ्वी और देवताओं का त्रस्त होना प्रमुख है।

राजा दशरथ की पुत्र प्राप्ति के लिए किए गए यज्ञ से राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का जन्म होता है। बाल्यकाल में राम और उनके भाइयों की लीलाओं का सुंदर वर्णन मिलता है। आगे चलकर विश्वामित्र ऋषि राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाते हैं, जहां वे ताड़का वध और राक्षसों का संहार करते हैं।

जनकपुर में सीता स्वयंवर का आयोजन होता है, जहां राम शिवधनुष को तोड़कर सीता से विवाह करते हैं। इस कांड में राम के आदर्श पुत्र, शिष्य और पति के रूप को दर्शाया गया है। साथ ही, भक्ति और धर्म के मूल सिद्धांतों को भी स्थापित किया गया है।

बालकाण्ड का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व

भारतीय महाकाव्य रामायण का प्रथम भाग बालकाण्ड अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें भगवान राम के जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा–दीक्षा तथा उनके आदर्श व्यक्तित्व की नींव का वर्णन मिलता है। यह केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रेरणादायक है।

धार्मिक महत्व

बालकाण्ड में भगवान राम को विष्णु के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह भाग भक्तों के लिए आस्था का प्रमुख स्रोत बनता है। इसमें यज्ञ, तप, गुरु–शिष्य परंपरा और धर्म के पालन की महत्ता पर विशेष जोर दिया गया है।

विश्वामित्र द्वारा राम और लक्ष्मण को शिक्षा देना यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक ज्ञान और धर्म का पालन जीवन में आवश्यक है।

ताड़का वध और राक्षसों के संहार के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि धर्म की रक्षा के लिए अधर्म का नाश करना जरूरी है।

सामाजिक महत्व

बालकाण्ड समाज को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसमें परिवार, गुरु, और समाज के प्रति कर्तव्यों का स्पष्ट चित्रण मिलता है।

राम का अपने माता–पिता के प्रति सम्मान और आज्ञाकारिता आदर्श पुत्र का उदाहरण प्रस्तुत करता है। गुरु विश्वामित्र के प्रति उनका समर्पण गुरु–शिष्य संबंध की महानता को दर्शाता है। सीता स्वयंवर का प्रसंग उस समय की सामाजिक परंपराओं और विवाह प्रणाली को दर्शाता है।

नैतिक शिक्षा

बालकाण्ड में सत्य, धर्म, विनम्रता और त्याग जैसे गुणों की शिक्षा दी गई है। यह सिखाता है कि व्यक्ति को सदैव धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए और अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

बालकाण्ड केवल एक कथा नहीं है, बल्कि यह धार्मिक आस्था, नैतिक मूल्यों और सामाजिक आदर्शों का संगम है। यह मनुष्य को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और समाज में सद्भाव एवं नैतिकता स्थापित करने का संदेश देता है।

2. अयोध्याकांड

अयोध्याकांड में राम के जीवन का अत्यंत मार्मिक और भावनात्मक पक्ष प्रस्तुत किया गया है। इस कांड में राम के राज्याभिषेक की तैयारी, कैकेयी के वरदान और राम के वनवास का वर्णन है।

कैकेयी, मंथरा के बहकावे में आकर राजा दशरथ से दो वर मांगती है। भरत को राज्य और राम को 14 वर्ष का वनवास। राम पिता के वचन की मर्यादा रखने हेतु वन जाने का निर्णय लेते हैं। सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ वन को प्रस्थान करते हैं।

राजा दशरथ राम–वियोग में प्राण त्याग देते हैं। भरत, जो इस षड्यंत्र से अनभिज्ञ थे, राम को वापस लाने का प्रयास करते हैं, किंतु राम धर्म का पालन करते हुए वनवास पूरा करने का निर्णय लेते हैं। भरत राम की खड़ाऊं को सिंहासन पर रखकर राज्य संचालन करते हैं।

यह कांड त्याग, कर्तव्य और पारिवारिक संबंधों की मर्यादा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अयोध्याकाण्ड का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व

रामायण का अयोध्याकाण्ड मानव जीवन के उच्च आदर्शों, त्याग, कर्तव्य और धर्मपालन का अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। इस काण्ड में भगवान राम के वनवास, परिवारिक संबंधों और राजधर्म की गहरी व्याख्या मिलती है।

धार्मिक महत्व

- अयोध्याकाण्ड धर्म की सर्वोच्चता को स्थापित करता है।
- राम का अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए 14 वर्ष का वनवास स्वीकार करना यह दर्शाता है कि धर्म और सत्य के लिए त्याग करना आवश्यक है।
- दशरथ द्वारा दिए गए वचन को निभाने की भावना वचनबद्धता और सत्यनिष्ठा का प्रतीक है।

- भरत का त्याग और राम के प्रति प्रेम यह दर्शाता है कि सच्ची भक्ति और निष्ठा क्या होती है।

सामाजिक महत्व

- अयोध्याकाण्ड समाज के आदर्श संबंधों और नैतिक मूल्यों को दर्शाता है।
- परिवार में प्रेम, त्याग और सम्मान का महत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
- राम, सीता और लक्ष्मण के बीच का संबंध परिवारिक एकता और सहयोग का आदर्श उदाहरण है।
- भरत का राज्य को अस्वीकार करना और राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर रखना यह सिखाता है कि सत्ता से अधिक महत्वपूर्ण धर्म और न्याय है।

नैतिक शिक्षा

- इस काण्ड से हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं।
- माता–पिता के प्रति आज्ञाकारिता , वचन निभाने की महत्ता ,त्याग और समर्पण , सच्चे प्रेम और भाई चारे का महत्व
- अयोध्याकाण्ड केवल एक कथा नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाला आदर्श ग्रंथ है। यह हमें बताता है कि कठिन परिस्थितियों में भी धर्म और कर्तव्य का पालन करना ही सच्चा जीवन है।

3. अरण्यकांड

- अरण्यकांड में राम, सीता और लक्ष्मण के वन जीवन का वर्णन है। इस कांड में विभिन्न ऋषियों से भेंट, राक्षसों का वध और वन की घटनाओं का चित्रण मिलता है।
- शूर्पणखा राम से विवाह का प्रस्ताव रखती है, जिसे अस्वीकार करने पर लक्ष्मण उसकी नाक काट देते हैं। इसके परिणामस्वरूप खर–दूषण और अन्य राक्षस राम पर आक्रमण करते हैं, जिन्हें राम पराजित करते हैं।
- रावण, शूर्पणखा के अपमान का बदला लेने के लिए मारीच की सहायता से सीता का हरण करता है। यह घटना कथा का महत्वपूर्ण मोड़ है। जटायु रावण से युद्ध करता है, किंतु घायल होकर प्राण त्याग देता है।
- इस कांड में धर्म और अधर्म के संघर्ष की भूमिका तैयार होती है।
- महत्वपूर्ण घटनाएँ शामिल हैं।

धार्मिक महत्व

- अरण्यकाण्ड में धर्म और अधर्म के संघर्ष को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।
- राम द्वारा ऋषियों की रक्षा और राक्षसों का संहार यह बताता है कि धर्म की रक्षा करना ईश्वर का कर्तव्य है।
- शूर्पणखा का प्रसंग काम, क्रोध और अहंकार के दुष्परिणामों को दर्शाता है।
- रावण द्वारा सीता हरण अधर्म की पराकाष्ठा को दिखाता है, जिसके कारण अंततः उसका विनाश होता है।

सामाजिक महत्व

- यह काण्ड समाज को कई महत्वपूर्ण संदेश देता है।
- स्त्री की सुरक्षा और सम्मान का महत्वरू सीता हरण की घटना समाज को यह सिखाती है कि स्त्री की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है।
- विपत्ति में धैर्य और साहसः कठिन परिस्थितियों में भी राम और लक्ष्मण का संयम आदर्श प्रस्तुत करता है।
- बुराई के परिणामः रावण का अहंकार यह दर्शाता है कि अधर्म और अहंकार अंततः विनाश का कारण बनते हैं।

नैतिक शिक्षा

अरण्यकाण्ड से हमें निम्न शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। संयम और मर्यादा का पालन, बुराई से संघर्ष करने का साहस ,संकट में धैर्य बनाए रखना , धर्म के मार्ग पर अडिग रहना

अरण्यकाण्ड जीवन के संघर्षों और चुनौतियों का प्रतीक है। यह सिखाता है कि कठिनाइयों के बीच भी धर्म, धैर्य और साहस बनाए रखना ही सच्चा मार्ग है।

4. किष्किंधाकांड

किष्किंधाकांड में राम की भेंट वानरराज सुग्रीव और हनुमान से होती है। हनुमान राम के परम भक्त के रूप में सामने आते हैं। राम और सुग्रीव के बीच मैत्री स्थापित होती है।

राम, सुग्रीव की सहायता के लिए बालि का वध करते हैं और सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाते हैं। इसके बाद सुग्रीव राम की सहायता के लिए वानरों को चारों दिशाओं में सीता की खोज के लिए भेजते हैं।

हनुमान, अंगद और अन्य वानर दक्षिण दिशा में जाते हैं, जहां उन्हें सीता के लंका में होने का संकेत मिलता है। यह कांड मित्रता, सहयोग और नेतृत्व की भावना को दर्शाता है।

किष्किंधा काण्ड का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व

रामायण का किष्किंधा काण्ड मित्रता, सहयोग, निष्ठा और धर्म के पालन का अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। इस काण्ड में भगवान राम और वानरराज सुग्रीव की मित्रता तथा हनुमान की भक्ति का सुंदर चित्रण मिलता है।

धार्मिक महत्व

- किष्किंधा काण्ड धर्म और भक्ति की भावना को मजबूत करता है।
- राम और सुग्रीव की मित्रता यह दर्शाती है कि धर्म के मार्ग पर चलने वालों की सहायता स्वयं भगवान करते हैं।
- बाली का वध यह सिखाता है कि अधर्म और अन्याय का अंत निश्चित है।
- हनुमान की निष्ठा और सेवा भाव भक्त और भगवान के आदर्श संबंध को दर्शाता है।

सामाजिक महत्व

- यह काण्ड समाज को सहयोग और सच्ची मित्रता का महत्व सिखाता है।
- राम और सुग्रीव की मित्रता यह बताती है कि सच्चा मित्र वही है जो कठिन समय में साथ दे।
- टीमवर्क और संगठन की शक्तिः वानर सेना का संगठन यह दिखाता है कि सामूहिक प्रयास से बड़े कार्य संभव होते हैं।
- नेतृत्व के गुणः राम का मार्गदर्शन और सुग्रीव का सहयोग आदर्श नेतृत्व और प्रबंधन का उदाहरण है।

नैतिक शिक्षा

किष्किंधा काण्ड से हमें कई महत्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं।

सच्ची मित्रता और विश्वास का महत्व , अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस ,निष्ठा और सेवा भाव ,सहयोग और एकता की शक्ति किष्किंधा काण्ड केवल मित्रता की कहानी नहीं, बल्कि यह जीवन में सहयोग, विश्वास और धर्म के महत्व को उजागर करता है। यह हमें सिखाता है कि एकता और सच्चे संबंधों के बल पर कठिन से कठिन कार्य भी संभव हो जाते हैं।

5. सुंदरकांड

- सुंदरकांड रामचरितमानस का सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय कांड माना जाता है। इसमें हनुमान की वीरता, बुद्धिमत्ता और भक्ति का अद्भुत वर्णन है।

- हनुमान समुद्र पार कर लंका पहुंचते हैं और अशोक वाटिका में सीता को खोज लेते हैं। वे राम की अंगूठी देकर उन्हें आश्वस्त करते हैं। इसके बाद हनुमान रावण के दरबार में जाते हैं और उसे राम की शक्ति का संदेश देते हैं।
- अंततः वे लंका में आग लगाकर वापस लौटते हैं और राम को सीता का समाचार देते हैं। सुंदरकांड भक्ति, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है।
- समुद्र लांघना यह सिखाता है कि आत्मविश्वास से बड़ी से बड़ी बाधा पार की जा सकती है।
- निष्ठा और कर्तव्यः हनुमान अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहते हैं।
- स्त्री सम्मानः सीता जी के प्रति हनुमान का आदर समाज में स्त्रियों के सम्मान का संदेश देता है।

नैतिक शिक्षा

- इस काण्ड से हमें निम्न शिक्षाएँ मिलती हैंकृ
- सच्ची भक्ति और विश्वास का महत्व, साहस और धैर्य बनाए रखना, कठिन परिस्थितियों में बुद्धिमत्ता का उपयोग, अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा ।
- सुन्दरकाण्ड केवल एक कथा नहीं, बल्कि यह भक्ति, साहस और समर्पण का अद्भुत संगम है। यह सिखाता है कि यदि मन में विश्वास और ईश्वर के प्रति श्रद्धा हो, तो जीवन की हर कठिनाई को पार किया जा सकता है।

6. लंकाकांड

- लंकाकांड में राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन है। राम वानर सेना के साथ लंका पर चढ़ाई करते हैं। समुद्र पर सेतु निर्माण (रामसेतु) इस कांड की प्रमुख घटना है।
- युद्ध में कई वीरों का पराक्रम देखने को मिलता है। लक्ष्मण और मेघनाद का युद्ध, कुम्भकर्ण का वध और अंततः राम द्वारा रावण का वध इस कांड के प्रमुख प्रसंग हैं।
- सीता की अग्निपरीक्षा के माध्यम से उनकी पवित्रता सिद्ध होती है। यह कांड धर्म की विजय और अधर्म के अंत का संदेश देता है।
- वानर, भालू आदि) का मिलकर कार्य करना सामाजिक समरसता का उदाहरण है।
- नेतृत्व और कर्तव्यः राम का आदर्श नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा समाज के लिए प्रेरणा है।

नैतिक शिक्षा

लंकाकाण्ड से हमें निम्न शिक्षाएँ मिलती हैं। सत्य और धर्म का पालन, अहंकार से दूर रहना, न्याय के लिए संघर्ष करना, एकता और सहयोग का महत्व लंकाकाण्ड केवल युद्ध का वर्णन नहीं है, बल्कि यह जीवन के मूल्यों की स्थापना का संदेश देता है। यह सिखाता है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, अंततः सत्य, धर्म और न्याय की ही विजय होती है।

7. उत्तरकांड

- उत्तरकांड रामचरितमानस का अंतिम कांड है, जिसमें रामराज्य की स्थापना और उसके आदर्शों का वर्णन है।
- राम अयोध्या लौटकर राज्याभिषेक करते हैं और आदर्श शासन स्थापित करते हैं, जिसे 'रामराज्य' कहा जाता है। इसमें प्रजा सुखी और संतुष्ट रहती है।
- सीता के त्याग, लव–कुश का जन्म और राम के जीवन के अंतिम चरण का वर्णन भी इसी कांड में मिलता है। अंत में राम अपने धाम को प्रस्थान करते हैं।
- यह कांड जीवन के अंतिम सत्य, त्याग और आदर्श शासन की अवधारणा को प्रस्तुत करता है।

उत्तरकाण्ड का धार्मिक एवं सामाजिक महत्व

रामायण का उत्तरकाण्ड रामायण का अंतिम भाग है, जिसमें भगवान राम के राज्याभिषेक, उनके राजकीय प्रशासन और जीवन के आदर्शों का वर्णन मिलता है। यह काण्ड केवल कथा नहीं, बल्कि धर्म, न्याय और सामाजिक आदर्शों का मार्गदर्शन है।

धार्मिक महत्व

- उत्तरकाण्ड धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- रामराज्य की स्थापना यह दर्शाती है कि धर्म का पालन और न्यायपूर्ण शासन मानव समाज का सर्वोच्च लक्ष्य है।
- राम द्वारा अपनी प्रजा के कल्याण की चिंता यह सिखाती है कि राजा का कर्तव्य केवल शासन नहीं, बल्कि प्रजा का सुख और धर्मपालन है।
- सीता की अग्नि परीक्षा और उनकी पवित्रता यह बताती है कि सत्य और धर्म का मार्ग हमेशा परिक्षा और धैर्य के साथ जुड़ा होता है।

सामाजिक महत्व

- उत्तरकाण्ड समाज में आदर्श जीवन और नैतिक मूल्यों को स्पष्ट करता है।
- न्याय और ईमानदारीः रामराज्य में सभी को समान न्याय और अधिकार मिलना आदर्श समाज की निशानी है।
- कर्तव्यनिष्ठाः राम का राजकाज में न्याय और कर्तव्य का पालन करना जीवन में जिम्मेदारी का संदेश देता है।
- परिवार और समाज में सामंजस्यरू परिवार, प्रजा और राज्य के बीच संतुलन बनाए रखना सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का आदर्श है।

नैतिक शिक्षा

- उत्तरकाण्ड से हमें निम्नलिखित शिक्षाएँ मिलती हैं।
- धर्म और न्याय का पालन सर्वोपरि है।
- कठिन परिस्थितियों में धैर्य और संयम बनाए रखना चाहिए।
- राजा और प्रजा दोनों का कर्तव्य है कि समाज की भलाई के लिए कार्य करें।
- सत्य और नैतिकता जीवन का आधार हैं। उत्तरकाण्ड केवल राम का राज्याभिषेक या जीवन की समाप्ति नहीं है, बल्कि यह आदर्श शासन, न्याय, धर्म और समाज के उच्च मूल्य सिखाने वाला ग्रंथ है। यह मानव जीवन को नैतिक और धार्मिक रूप से मार्गदर्शित करता है और समाज में सद्भाव, न्याय और धर्म की स्थापना का संदेश देता है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन के आदर्शों का दर्पण है। इसके सातों कांड जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैंकृजन्म, शिक्षा, त्याग, संघर्ष, मित्रता, भक्ति, युद्ध और अंततः मोक्ष।

तुलसीदास ने इस ग्रंथ के माध्यम से समाज को धर्म, मर्यादा, प्रेम, करुणा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। आज भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता बनी हुई है और यह भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ है।

इस प्रकार, रामचरितमानस के सभी कांड मिलकर एक संपूर्ण जीवन दर्शन प्रस्तुत करते हैं, जो न केवल आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाते हैं, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वाल्मीकि रामायण वाल्मीकिरामायण, अनुवादः रमेशचंद्र शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास, 2010 ।
2. रामचरितमानस तुलसीदास,रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2015।
3. रामायण टीकाएँ और व्याख्याएँ शास्त्री, के.सी., रामायणः टीका और व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, 2005।
4. आधुनिक विश्लेषणात्मक पुस्तकें शर्मा, रामकृष्ण, रामायण और भारतीय संस्कृति, दिल्लीरू भारतीय विद्या भवन, 2008।
5. प्रसाद, राजेन्द्र। रामराज्य और नैतिकता। वाराणसीः चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 2012।
6. शर्मा, मुरारी प्रसाद, हनुमानः धर्म और भक्ति पर अध्ययन, जयपुररू हिंदी साहित्य अकादमी, 2011।
5. शोध पत्र और जर्नल लेख
7. रामचरितमानसरू धर्म और समाज का अध्ययन, जर्नल ऑफ हिन्दू स्टडीज, वॉल्यूम 12, अंक 3, 2016 ।
8. रामायण और भारतीय समाज इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, वॉल्यूम 42, अंक 2, 2015।